❍ 19 / 01 / 22 की मुरली से चार्ट ❍

⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *स्वयं को चलता फिरता लाइट हाउस अनुभव किया ?*

➢➢ *सहज योगी जीवन का अनुभव किया ?*

➢➢ *संतुष्टता और प्रसन्नता का अनुभव किया ?*

➢➢ *ब्रह्मा बाप की भुजाओं में समाये रहे ?*

———————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *अभी एकाग्रता का दृढ़ संकल्प करने वाला ग्रुप तैयार होना चाहिए,* जो सागर के तले में जाकर अनुभव के हीरे, मोती लेकर आये। *लहरों में लहराने का अनुभव तो किया अब अन्दर तले में जाना है। अमूल्य खजाने तले में मिलते हैं, इससे आटोमेटिक सब बातों से किनारा हो जायेगा।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

✪ *श्रेष्ठ स्वमान* ✪

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं बापदादा के साथ रहने वाली सदा विजयी आत्मा हूँ"*

〰✧ सदा अपने को बापदादा के साथी समझते हो? *जब सदा बाप का साथ अनुभव होगा तो उसकी निशानी है - 'सदा विजयी'। अगर ज्यादा समय युद्ध में जाता है, मेहनत का अनुभव होता है तो इससे सिद्ध है - बाप का साथ नहीं। जो सदा साथ के अनुभवी हैं वे मुहब्बत में लवलीन रहते हैं।*

〰✧ प्रेम के सागर में लीन आत्मा किसी भी प्रभाव में आ नहीं सकती। माया का आना यह कोई बड़ी बात नहीं लेकिन वह अपना रूप न दिखाये। *अगर माया की मेहमान-निवाजी करते हो तो चलते-चलते 'उदासी' का अनुभव होगा। ऐसे अनुभव करेंगे जैसे न आगे बढ़ रहे हैं न पीछे हट रहे हैं। पीछे भी नहीं हट सकते, आगे भी नहीं बढ़ सकते - यह माया का प्रभाव है।*

〰✧ माया की आकर्षण उड़ने नहीं देती। पीछे हटने का तो सवाल ही नहीं लेकिन अगर आगे नहीं बढ़ते तो बीज को परखो और उसे भस्म करो। *ऐसे नहीं - चल रहे हैं, आ रहे हैं, सुन रहे हैं, यथाशक्ति सेवा कर रहे हैं। लेकिन चेक करो कि अपनी स्पीड और स्टेज की उन्नति कहाँ तक है।*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ 5 सेकण्ड कभी भी निकाल सकते हो या नहीं? *ऐसा कोई बिजी है, जो 5 सेकण्ड भी नहीं निकाल सके!* है कोई तो हाथ उठाओ। फिर तो नहीं कहेंगे - क्या करें टाइम नहीं मिलता? यह तो नहीं कहेंगे ना! टाइम नहीं मिलता है? *तो यह एक्सरसाइज बीच-बीच में करो।*

〰✧ *किसी भी कार्य में हो 5 सेकण्ड की यह मन की एक्सरसाइज करो। तो मन सदा ही दुरुस्त रहेगा, ठीक रहेगा।* वापदादा तो कहते हैं - हर घण्टे में यह 5 सेकण्ड की एक्सरसाइज करो। हो सकती है? देखो, सभी कह रहे हैं - हो सकती है। याद रखना। ओम शान्ति भवन याद रखना, भूलना नहीं तो जो मन की भिन-भिन्न कम्पलेन है ना!

〰✧ क्या करें मन नहीं टिकता! मन को मण बना देते हो। वजन करते हैं ना! पहले जामने में पाव, सेर और मण होता था, आजकल बदल गया है। तो *मन को मण बना देते हैं बोझ वाला और यह एक्सरसाइज करते रहेंगे तो बिल्कुल लाइट हो जायेंगे।* अभ्यास हो जायेगा।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *बीजरूप स्तिथि में स्तिथ रहेंगे तो अनेक आत्माओं में समय की पहचान और बाप की पहचान का बीज पड़ेगा।* अगर बीजरूप स्थिति में स्थित न रहे, सिर्फ विस्तार में चले गए तो क्या होगा? *ज्यादा विस्तार से भी वैल्यु नहीं रहेगी, व्यर्थ हो जायेगा। इसलिए बीजरूप स्थिति में स्थित हो बीजरूप की याद में स्थित हो, फिर बीज डालो। फिर देखना, यह बीज का फल कितना अच्छा और सहज निकलता है।*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- सवेरे उठकर बाबा को प्रेम से याद करना*"

➳ ➳ मीठे बाबा की मधर यादो में खोयी खोयी मै आत्मा...मधबन में मीठे

बाबा की झोपडी में... मन बुद्धि से उड़ कर पहुंचती हूँ... *प्यारे बाबा बाहें फैलाये, मुझे प्यार करने को आतुर है... उनकी मखमली गोद में जाकर, मै आत्मा बैठ जाती हूँ.*.. और फूलो सा विश्राम पाती हूँ... मीठे बाबा मुझ आत्मा के सर पर... अपना वरदानी हाथ फेरते है...और असीम शक्तियो से भर देते है...

❊ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को अपनी मीठी यादो में डुबोते हुए कहते है :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... *प्रकृति के शांत और सुगन्धित माहौल में... सवेरे सवेरे उठकर, मीठे बाबा की यादो में गहरे डूब जाओ.*.. यह मीठी यादे ही सुखो का आधार बन, सतयुगी दुनिया में ले जाएँगी... *इन मीठी यादो से ही पत्थर बुद्धि से... पारस बुद्धि बन, अनन्त सुखो के अधिकारी बनोगे..."*

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा के अमूल्य रत्नों को बुद्धि झोली में भरते हुए कहती हूँ :-* "मीठे प्यारे बाबा मेरे... मै आत्मा सवेरे सवेरे आपकी मीठी यादो में डूबकर, अनन्त खजानो की मालिक बन रही हूँ... *आपकी यादो में, देहभान में किये विकर्मो को भस्म कर...पुनः पावनता से सज संवर रही हूँ... पवित्र बुद्धि की मालिक बन रही हूँ..."*

❊ *मीठे बाबा मुझ आत्मा को पावनता के गहरे राज समझाते हुए कहते है :-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... *अमृतवेले उठकर मीठे बाबा को बड़े प्यार से, दिल से याद करो..*. मीठे बाबा से मीठी मीठी बाते करो... ईश्वरीय शक्तियो से स्वयं को भरपूर करो... *और देह के भान में पतित हो गयी बुद्धि को यादो में पावन बनाकर... देवताई सुखो के मालिक बनो...*

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा के प्यार में गहरे डूबकर कहती हूँ :-* "मीठे मीठे बाबा मेरे... *आपकी यादो की खुशबु ने मेरे जीवन का कायाकल्प किया है...* दिव्यता और गुणो से सजाकर, आपने मुझ आत्मा को दिव्य और प्यारा बना दिया है... *पावनता के रंग में रंगकर... देवताई सुंदरता से भर दिया है.*.."

❊ *मीठे बाबा मुझ आत्मा को ईश्वरीय याद के जादु को समझाते हुए कहते है :-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... *सवेरे के यादो भरे पलो में, दिल की गहराइयो से, मीठे बाबा की याद कर प्यार की जादगरी को देखो..*. यह यादे

कितना खूबसुरत बनाकर, अथाह सुखो का अधिकार दिलायेगी... *पतित बुद्धि को पावन बनाकर... असीम आनन्द का खजाना दिलायेगी..."*

➳ _ ➳ *मै आत्मा अपने पयरे बाबा को रोम रोम से सुक्रिया करते हुए कहती हूँ :-* "मीठे प्यारे बाबा...मनुष्यो की यादो में जीवन दुखो का जंगल बन गया था...और मै आत्मा, उसमे गहरे उलझ... पत्थर बुद्धि बन गयी... *आपने अपनी यादो की गोद में बिठाकर मुझे खुशियो से भर दिया है... मेरी विकारी बुद्धि को अपनी यादो में पुनः पवित्र कर दिया है...* मीठे बाबा से मीठी रुह रिहान कर मै आत्मा... स्थूल वतन लौट आयी..."

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- स्वयं को चलता फिरता लाइट हाउस अनुभव करना*"

➳ _ ➳ अपने प्यारे परमपिता परमात्मा से साकार मिलन मनाने का सुख पाने की इच्छा से मैं मधुबन के डायमण्ड हॉल में पहुंच कर वहां के खूबसूरत नज़ारे का आनन्द ले रही हूँ। *मैं देख रही हूँ वहां उपस्थित उन हजारों ब्राह्मण आत्माओं को जो परमात्मा से मिलने के लिए दूर दूर से आई हुई है*। परमात्म मिलन की मस्ती में डूबी हुई सभी आत्मायें जैसे मन की डांस कर रहीं हैं। मन ही मन खुशी में झूम रहीं हैं, गा रहीं हैं कि आज हमारे बाबा आने वाले हैं। रूहानियत से सभी के चेहरे चमक रहें हैं। *सभी के मुख मण्डल पर एक दिव्य आभा छाई हुई है। जिसे देख कर स्पष्ट अनुभव हो रहा है कि इन्हें वो मिला है जो दुनिया में किसी को नही मिला*। सभी के चेहरे की सन्तुष्टता जैसे बयां कर रही है कि "जो पाना था वो पा लिया, अब और कुछ पाने की इच्छा नही रही"

➳ _ ➳ भगवान के सम्मुख आने की घड़ियां नजदीक आ रही हैं। इसलिए सभी योगयुक्त हो कर अपने प्यारे प्रभु की याद में बैठे बार बार अपने मीठे बाबा का आह्वान कर रहें हैं। सामने स्टेज पर बाबा के निर्धारित रथ गलजार

दादी जी का आगमन हो चुका है। *दादी जी को देख कर आभास होता है जैसे कोई महान तपस्विनी आत्मा सामने बैठी है*। कुछ सेकेंड में ही बापदादा की पधरामनी हो जाती है। पूरे डायमण्ड हाल में एक गहन सन्नाटा छा जाता है और देखते ही देखते बापदादा के शक्तिशाली वायब्रेशन पूरे डायमण्ड हॉल में फैलने लगते हैं। *बाबा की दृष्टि एक - एक करके डायमण्ड हाल में बैठी सभी आत्माओं पर पड़ने लगती हैं*। सभी बाबा से दृष्टि लेते हुए स्वयं को सर्वशक्तियों से भरपूर कर रहें हैं। बाबा बीच बीच मे हाथ उठा कर सभी की झोली वरदानो से भर रहें हैं।

➳ _ ➳ अपनी मीठी दृष्टि से वहां उपस्थित अपने सभी ब्राह्मण बच्चो को तृप्त करके अब बाबा सभी बच्चों को ओमशान्ति कह कर मधुर महावाक्य उच्चारण कर रहें हैं। *आज बाप दादा विशेष रूप से "सेकेंड में विस्तार को सार में समाने का अनुभव" बढ़ाने का इशारा दे रहें हैं*। बाबा पूछ रहे है कि समय प्रमाण अगर सेकण्ड में साथ चलने का डायरेक्शन मिले तो सेकण्ड में विस्तार को सार में समा सकेंगे? शरीर की प्रवृत्ति, लौकिक प्रवृत्ति, सेवा की प्रवृत्ति, अपने रहे हुए कमज़ोरी के संकल्प की और संस्कार प्रवृत्ति, सर्व प्रकार की प्रवृत्तियों से न्यारे और बाप के साथ चलने वाले प्यारे बन सकते हो? वा कोई प्रवृत्ति अपने तरफ आकर्षित करेगी?

➳ _ ➳ डायरेक्शन मिले कि अब चलना है तो क्या डबल लाइट के उड़न आसन पर स्थित हो उड़ जायेंगे? *यह कह कर बाबा अब सभी बच्चों को ड्रिल करवा रहें हैं कि अभी सेकण्ड में हर प्रकार के विस्तार को सार में समाकर बिंदु रूप में स्थित हो जाओ*। बाबा का निर्देश मिलते ही सभी बातों से मन बुद्धि को समेट कर अपने मन बुद्धि को भृकुटि पर एकाग्र कर मैं अपने ज्योति बिंदु स्वरूप में स्थित हो जाती हूँ। अब मैं देख रही हूं स्वयं को अपने वास्तविक निराकारी स्वरूप में। *इस स्वरूप में टिकते ही मुझे मेरे मौलिक गुणों और शक्तियों का सहज अनुभव हो रहा है और गहन शांत चित्त स्थिति में मैं सहज ही स्थित होती जा रही हूँ*।

➳ _ ➳ इस शांति चित्त स्थिति में स्थित होते ही मुझे अंतर्मुखता का विचित्र अनभव हो रहा है। मैं स्वयं को एक ऐसी दनिया में देख रही हैं जहां

रुहों का निवास है। हर तरफ रूहें ही रूहें दिखाई दे रही हैं। *देह और देह से जुड़ी कोई भी वस्तु यहां दिखाई नहीं दे रही। रूह रिहान भी आत्मा का आत्मा से*। सम्बन्ध भी आत्मिक और दृष्टिकोण भी रूहानियत से भरा। मैं आत्मा स्वयं को साक्षी स्थिति में अनुभव कर रही हूं, जैसे कि देह से संकल्प मात्र भी अटैच नहीं हूं। बेहद न्यारी और प्यारी अवस्था है यह।

➳ _ ➳ इसी न्यारी और प्यारी अवस्था में स्थित होकर अब मैं जा रही हूं अपने निजधाम अपने परमप्रिय परमपिता शिव बाबा के पास और उनके पास पहुंच कर स्वयं को उनकी सर्वशक्तियों से भरपूर करके वापिस लौट रही हूं। *डायमण्ड हॉल में आ कर अपने साकारी ब्राह्मण तन में विराजमान हो कर मैं फिर से बापदादा के मधुर महावाक्यों को सुन रही हूं* और उनके साथ साकार मधुर मिलन का आनन्द ले रही हूं।

———————————————————

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं भुजाओं में समाने और भुजाये बन सेवा करने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं ब्रह्मा बाप के स्नेही आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————————

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा संतुष्टता और प्रसन्नता की विशेषता को धारण करती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदा उड़ती कला का अनुभव करती हूँ ।*
✺ *मैं डबल लाइट फरिश्ता हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————————

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ 1. बापदादा को चारों ओर के बच्चों से अभी तक एक आश रही हुई है। बतायें वह कौन-सी आश है? जान तो गये हो! टीचर्स जान गई हो ना! सभी बच्चे यथा शक्ति पुरुषार्थ तो कर रहो हो। *बापदादा पुरुषार्थ को देख करके मुस्कराते हैं। लेकिन एक आश यह है कि पुरुषार्थ में अभी तीव्र गति चाहिए। पुरुषार्थ है लेकिन अभी तीव्रगति चाहिए। इसकी विधि है - 'कारण' शब्द समाप्त हो जाए और निवारण स्वरूप सदा बन जायें।* कारण तो समय अनुसार बनते ही हैं और बनते रहेंगे। लेकिन आप सब निवारण स्वरूप बनो क्योंकि आप सभी बच्चों को विश्व के निवारण कर सभी को, मैजारिटी आत्माओं को निर्वाणधाम भेजना है। तो जब स्वयं को निवारण स्वरूप बनाओ तब विश्व की आत्माओं को निवारण स्वरूप द्वारा सब समस्याओं का निवारण कर निर्वाणधाम में भेज सकेंगे। अभी विश्व की आत्मायें मुक्ति चाहती हैं तो बाप द्वारा मुक्ति का वर्सा दिलाने वाले निमित्त आप हो। तो निमित्त आत्मायें पहले स्वयं को भिन्न-भिन्न समस्याओं के कारण को निवारण कर मुक्त बनायेंगे तब विश्व को मुक्ति का वर्सा दिला सकेंगे। तो मुक्त हैं? किसी भी प्रकार की समस्या का कारण आगे नहीं आये, यह कारण है, यह कारण है, यह कारण है... जब कोई कारण सामने बनता है तो कारण का सेकण्ड में निवारण सोचो, यह सोचो कि जब विश्व का निवारण करने वाली हूँ तो क्या स्वयं की छोटी-छोटी समस्याओं का स्वयं निवारण नहीं कर सकती! नहीं कर सकता! अभी तो आत्माओं की क्यू आपके सामने आयेगी 'हे मुक्तिदाता मुक्ति दो' क्योंकि मुक्ति दाता के डायरेक्ट बच्चे हो, अधिकारी बच्चे हो। मास्टर मुक्तिदाता तो हो ना। लेकिन क्य के आगे आप मास्टर मक्तिदाताओं के तरफ से एक रुकावट का

दरवाजा बन्द है। क्यू तैयार है लेकिन कौन-सा दरवाजा बन्द है? पुरुषार्थ में कमजोर पुरुषार्थ का, एक शब्द का दरवाजा है, वह है 'क्यों'। क्वेश्चन मार्क (?) क्यों, यह 'क्यों' शब्द अभी क्यू को सामने नहीं लाता। *तो बापदादा अभी देश-विदेश के सभी बच्चों को यह स्मृति दिला रहे हैं कि आप समस्याओं का दरवाजा 'क्यों', इसको समाप्त करो।*

➳ _ ➳ 2. *हर एक समझें मुझे करना है। टीचर्स समझें मुझे करना है, स्टूडेन्ट समझें मुझे करना है, प्रवृत्ति वाले समझें मुझे करना है, मधुबन वाले समझें हमें करना हैं।* कर सकते हैं ना? समस्या शब्द ही समाप्त हो जाये, कारण खत्म होके निवारण आ जाए।

➳ _ ➳ 3. *कुछ भी हो, सहन करना पड़े, माया का सामना करना पड़े, एक-दो के सम्बन्ध-सम्पर्क में सहन भी करना पड़े, मुझे समस्या नहीं बनना है।*

✺ *ड्रिल :- "पुरुषार्थ की गति में तीव्रता का अनुभव"*

➳ _ ➳ *अमृतवेले मै आत्मा बाबा को गुड मॉर्निंग कह, एक एकांत स्थान पर बैठ, अंतर्मन की गहराइयों से प्यारे बाबा को याद करती हूँ...* मै आत्मा मस्तक में चमकता हुआ सितारा इस देह से न्यारी हो, उड़ती चली जा रही हूँ... उड़ते-उड़ते मै आत्मा सामने से चमकते हुए वस्त्र में बाबा को आता हुआ अनुभव कर रही हूँ... *सामने से आते हुए बाबा मुस्कुराते हुए मुझ आत्मा का आह्वान कर रहे है...*

➳ _ ➳ मै आत्मा झट से बाबा की गोद में जाकर बैठ जाती हूँ... *बाबा का स्पर्श पाते ही उन से निकलती हुई दिव्य शक्तियाँ मुझ आत्मा में प्रवाहित होने लगती है... इन शक्तियॉ को समाती हुई मै आत्मा एक दम फरिश्ता स्वरुप हल्की होती जा रही हूँ...* बाबा मुझ आत्मा को सूक्ष्मवतन की सैर करवाते है... चारो तरफ प्रकाश ही प्रकाश दिखाई दे रहा है... फ़रिश्ते ही फ़रिश्ते दिखाई दे रहे है... बाबा मुझ आत्मा को एक ऐसे स्थान पर ले जाते है जहाँ फ़रिश्ते गोला बना कर बैठे है, और बीच में बाबा बैठ जाते है... आ जाओ बच्ची अपना स्थान

ग्रहण करो, इस फरिश्तों की दुनिया में तुम्हारा स्वागत है... मै फरिश्ता स्वरुप आत्मा उस गोले में बैठ जाती हूँ...

➳ _ ➳ बाबा के नैनो से वा मस्तक से निकलती हुई तेजोमय किरणों से फरिश्तो के चारो ओर एक गोला बनता जा रहा है... इस गोले में बैठी हुई मै फरिश्ता स्वरुप आत्मा बाबा से निकलती हुई दिव्य गुणों वा शक्तियों को अपने में समाती जा रही हूँ... *इन शक्तियों में समाई हुई मै आत्मा अपने सामने सृष्टि के चक्र को फिरता हुआ देख रही हूँ...* इस चक्र के द्वारा मुझ आत्मा में 5000 वर्ष पहले वाली स्मृतियाँ जागृत हो रही है... मै आत्मा दिव्य दृष्टि द्वारा अपने 5000 वर्ष पहले वाले देव स्वरूप को स्पष्ट देख रही हुँ... *जैसे-जैसे चक्र आगे फिरता जा रहा है, मै त्रिकालदर्शी आत्मा अपने पूरे 84 जन्मो को जान गई हूँ...*

➳ _ ➳ *मै साधारण नही, देव आत्मा हूँ... मै भाग्यशाली आत्मा हूँ, स्वयं भाग्य विधाता मुझ आत्मा को कर्मो की गुह्य गति को समझा श्रेष्ठ भाग्य बनाने की विधि बता रहे है...* मै विश्व कल्याणकारी आत्मा हूँ... इन स्मृतियो के साथ मैं आत्मा पुनः अपने पुराने शरीर में प्रवेश करती हूँ... मै ब्राह्मण आत्मा हूँ... मुझ आत्मा को स्व परिवर्तन द्वारा विश्व परिवर्तन के कार्य में बाबा का सहयोगी बनना है... *अपने आदि स्वरुप को स्मृति में रख मै आत्मा काम चिता से उतर ज्ञान चिता पर बैठ जाती हूँ...*

➳ _ ➳ इस योग अग्नि में मुझ आत्मा से विकारो रुपी खाद निकलती जा रही है... *इस योग अग्नि में तप मै आत्मा सच्चा सोना बनती जा रही हूँ...* अब इस योग अग्नि द्वारा मुझ आत्मा की कृति, दृष्टि, वृत्ति वा संकल्प शुद्ध बन गए है... अब मैं आत्मा कारण को समाप्त कर निवारण स्वरुप बन गयी हूँ... मै आत्मा संतुष्टमणि बन हर परिस्थिति में समाधान स्वरुप बन तीव्र पुरुषार्थ द्वारा निरतंर आगे बढ़ती जा रही हूँ... *मै आत्मा अपने देव स्वरुप को बुद्धि द्वारा अनुभव करती रॉकेट की भांति हर आकर्षण को चीरती हुई पुरानी दुनिया से अलग होती जा रही हूँ...*

➳ ➳ मै मास्टर मक्तिदाता आत्मा सर्व प्रकार के क्यों, क्या रुकावट रुपी

दरवाजो को समाप्त कर, इस पुरानी दुनिया में स्वयं को मेहमान समझ क्यू में खड़ी सभी दुखी आत्माओ को निमित्त भाव से मुक्ति का रास्ता बताती जा रही हूँ... *मैने भगवान को नही ढूंढा, भगवान ने स्वयं मुझे ढूँढा है... मैं आत्मा श्रीमत पर चलते हुए परमात्मा के कार्य में सहयोगी बन रही हूँ... सभी विकारो का त्याग कर तीव्र पुरुषार्थी बन, पवित्रता को धारण कर पवित्र दुनिया में चलने के लिए तैयार हो रही हूँ... मेरा तो एक शिव बाबा और... दूसरा ना कोई...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔